श्रीसीतारामचंद्राभ्यां नमः श्रीमते रामानंदाचार्याय नमः

सीता गुण दर्पण

लेखक:**श्री स्वामी युगलानन्य शरण जी महाराज** (श्री लक्ष्मण किला के संस्थापक)

श्री रसिक रघुनन्दनजी के गुण समुदाय वर्णन में यद्यपि श्रीलाडिलीजी के भी गुण आ जाते हैं । रूप में कुछ भेद नहीं तथापि बिना पृथक् कुछ कहे नहीं रहा जाता । अतः श्रीलाड़िलीजी के कुछ स्वरूपमय गुण कहे जाते हैं ।

श्री जनकलाडिली जू के दाख के पाक सुधाकन्दादि से शतकोटि गुणित मधुर स्वादुमय वचन हैं। जिनके श्रवण करने का उत्साह चाह अनुक्षण श्री सनेह सागरजी को भी रहता है । मृदुल मनहरण चरण सरोज जावक से रंगीन सहज ही प्रीतम मनमोहन, मृदुल, मनोहर नूपुरों के सहित शोभित हैं । जहाँ निरन्तर परम रसिकों के मन मधुप मकरन्द पान कर मत्त होकर गुँजार करते रहते हैं । नख मणि की छटा मानों छवि मेघ की घटा हैं । वह लावण्य युक्त सरस प्रकाशरस बरसाती हैं। जिनकी आभा के अंशांश से व्यापक ब्रह्म निर्विकार कहलाता है । इसी प्रकार अंगुलियाँ जगमग भूषण से जगमग हो रही हैं। नख शिख सुषमाखानि हैं। कभी भानु की उष्णता जिनको स्वप्न में भी नही लग पाती है । इसलिये अति कोमलतर अङ्ग हैं। रमा, भवानी, ब्रह्माणी आदि सभी जिनकी माधुरी अवलोकन कर पहिले तो परम संकोच को प्राप्त होती हैं। पश्चात् दासी होकर सेवन करती हैं । कमल से भी अत्यन्त कोमल रसमयी भूमि में चरण रखते समय उनकी सुकुमारता विचारकर सखीगण तथा प्रीतम को भय हो जाता है और कहाँ तक कहें जावक भी चरणकमल में भार की भाँति लगता है । वीणा आदि यन्त्र को बजाने तथा समझने में परम कुशला हैं । नृत्यभेद तथा अनन्त राग रागिनियों को यथार्थ जानती हैं । गान आदि कलाओं में ऐसा चातुर्य है कि प्रियतम को अद्-भुत जान पड़ते हैं । तथा यह विचारकर चकित होते हैं कि श्रीलाड़िलीजू इस रागिनी को कहाँ से गातीं हैं? हमने तो इस रागिनी का नाम भी नहीं सुना है। बिना राग तान के एक दिन भी व्यतीत नहीं होता है । मणिजटित सुगन्ध सुगन्धित विचित्र चित्रकारियों से चित्रित महल अटारियों में प्रियतम तथा सखियों के साथ निरन्तर मोद प्रमोद करती रहती हैं ।

वहाँ रमा, गौरी, गिरा आदि करोड़ों देव- कन्या नागकन्या किन्नरी आसुरी नरी कोटि-कोटि सेवन में लगी रहती हैं । चँवर व्यजन आदि होते रहते हैं । आप सखियों के कर-कमलों से समर्पित विविध सुगन्ध सम्पन्न दिव्य ताम्बूल वीटिका चर्वण करती हैं। आपके बदन की ललाई में श्रीलालजी लट्टू होकर बार-बार छटा निहारते हैं । आप अनेक सुकुमारी नायिकाओं के अद्भुत हास विलास लाड़ को पाती हैं । कभी उदासीनता न होने पावे इस विचार से प्रीतम सहित सभी सखियाँ आपका मन जोगाती रहतीं हैं। तनुतर अत्यन्त क्षीण कटि प्रदेश में सौन्दर्य निधान कांची आदि भूषण सम्पन्न विलसित हैं । परमयौवनमयी रसमयी त्रयोदशवर्ष की अवस्था सर्वदा एकरस बनी रहती है । जैसे श्रीमहाराजकुमारजी षोडश वर्ष के नित्य किशोर रंगबोर चितचोर बने रहते हैं। वैसे ही श्रीकिशोरीजी को जानिये । रसिक सुख सम्पत्ति श्री दम्पतिजी के सदा एक वय, एक प्राण, एक मन और एक ही सब रहस्य रहा करते हैं ।

श्री सुकुमारी जी नित्य अखण्ड सौभाग्य लक्ष्मी से सम्पन्न हैं। आपके समस्त लक्षण परम दिव्य भव्य नव्य और अनुपम हैं । आपके श्री सौभाग्य का सरकार भी पार नहीं पाते क्योंकि वह अनन्त है । ज्योतिष सामुद्रिक तथा उत्तम चिह्न गुण प्रकाशक शास्त्र समूह केवल श्रीजानकी जी में ही सफल अर्थात् संघटित हुए औरों में कहाँ पाया जायगा ? आपके मन वचन तन में शास्त्र लोक सम्मत अपलक्षणों का स्वप्न में भी लेश नही हुआ है । श्रीकिशोरीजी की कौन बात, उनकी दासी की दासी भी अपनी कान्ति से रमा आदिकों के सौभाग्य सौन्दर्य को तुच्छ करती हैं । श्री जनकनन्दिनी जी रूप सौन्दर्य माधुर्य कान्ति लावण्य सौगन्ध्य आदि दिव्य अनन्त गुणों से मण्डिता हैं । अनेक जन्मों से थकी हुई सरस्वती आप में साक्षात् तथा औरों में वचन रूप से स्थित हो केवल श्रीजानकीजी के रूप गुण कथन में विश्राम पाती हैं। और किसी के वर्णन में उन्हें बहुत दुःसह दुःख होता है क्योंकि उसमें श्रीसीतारामजी के नाम और रूप के बिना दूसरी तरह के वाग्विलास जो लोग सामान्य व विशेषरूप से करते हैं उससे वह थक जाती हैं ।

श्रीजानकीजी के परम स्वच्छ यश नाम आदि श्री प्यारे जी के समान ही हैं क्योंकि दम्पतिजी के नाम रूप गुण में कुछ भेद नहीं है यही सिद्धान्त सार है । श्रीजानकीजी के अंशांश से उत्पन्न मूल प्रकृति के भ्रू विलास से करोड़ों ब्रह्माण्डों के स्थिति संहार जन्म हुआ करते हैं । ऐसी श्रीजानकीजी में जिन अभागों का स्नेह निश्छल भाव से नहीं हुआ वे ही मायामयी चक्की में असंख्य कोटि बार पीसे जाते हैं और पीसे जायेंगे किन्तु जिनका स्नेह है वे परमानन्द का निर्विवाद स्वाद लेते हैं और सदा लेंगे । मैं दृढ़तर लीक खींचकर कहता हूँ कि यदि शीघ्र बन्धन से छूटने की इच्छा हो तो अनन्यशरण श्रीजानकीजी के हो जाओ। इसी में अनमोल अमल कुशल है, जिस परात्पर वस्तु के लिये सदा पचते हो वह अनायास ही मिल जायगी । श्री लड़ैतीजू में अविरल स्नेह हुआ तो सब काम सफल हुआ। किसी ब्याज से भी श्रीसीतादिक नाम के उच्चारण होने से प्यारे वशीभूत हो जाते हैं । वही उपाय करना उचित है कि जिससे श्रीप्यारीजी में प्रीति बढ़े। जिनकी कृपा दृष्टि की लालसा श्रीलालजी को अनुक्षण बनी रहती है दूसरे की कौन कहे ? यह अखिल विश्व और वह परम दिव्य त्रिपाद विभूति दोनों ही जिनकी अनुग्रहमयी दृष्टि के अधीन हैं और क्या कहा जाय ?

परम सिद्धांत ज्ञाता श्रीरघुनाथ कृपापात्र श्रीहनुमानजी ने भी यही कहा कि श्रीरघुबर प्राणप्यारी सुकुमारी श्री किशोरीजी के सदृश दूसरी पाने के लिये यदि अखिल ब्रह्माण्डों में श्रम करके अन्वेषण किया जाय तो भी मिलना कठिन बात है क्योंकि इनके समान यही हैं यह बात श्रीमद्रामायण में प्रसिद्ध है । और भी श्री वायुनन्दनजी ने कहा कि त्रैलोक्यराज्य तथा भोग ऐश्वर्य भी श्री जानकी जी के कोटितम (करोड़वें) अंश के समान भी सुखदायी नहीं है क्योंकि श्री किशोरी जी अनूठी और अनुपम हैं-

यदि रामः समुद्रान्तां मेदिनीं परिवर्तयेत् । अस्याः कृते जगच्चापि युक्तमित्येव मे मतिः । राज्यं वा त्रिषु लोकेषु सीता वा जनकात्मजा । त्रैलोक्य राज्यं सकलं सीताया नाप्नुयात्कलाम् ॥

श्री जानकी जी की सुधारस सानी वाणी सुनकर श्रीमारुतनन्दनजी ने कहा कि हे सर्वेश्वरी शरणागत पालिनी ! आपके स्वाभाविक वचनामृत से हम तृप्त हैं । आपके मधुर रसमय वचन को सुनकर भुक्ति मुक्ति सब फीकी जान पड़ती है क्योंकि यह परम ज्ञाताओं का भी सर्वस्व है । आपकी रसमयी चेष्टा श्रीरघुनन्दनजी के रसमय क्लेश विशेष को दूर

करने वाली है । आप श्री जीवनप्राणजी के हृदय में अमित भाँति से परम विनोद बढ़ातीं हैं और पतिव्रताएँ आपके पद पंकज पराग का सेवन स्मरण कर स्वधर्म में आरूढ़ होती हैं ।

निःस्वार्थ भाव से मित्र शत्रु मध्यस्थों का मन वचन से निरन्तर और स्वाभाविक ही हित चाहने को दया कहते हैं । देशकाल विचार कर स्वयं दुःख सह करके, देने को दान कहते हैं । शरीर मन और वचन के दण्ड को तप कहते हैं। शीत उष्ण सहकर निरालस हो गुरु-जन और सज्जनों की अत्यन्त निष्काम सेवारूपी दण्ड को शारीरिक तप कहते हैं । राग द्वेष और कामादि बड़े शत्रुओं को जीतना और प्राणायाम प्रत्याहारादि द्वारा विषयों को जीतकर मन को दण्ड देना मानसिक तप कहलाता है । मिथ्या तथा क्रूर वा कठोर वचन न निकलने देने वा मौन रहने द्वारा मन के दण्ड को मानसिक तप कहते हैं । शौच दो प्रकार का है - बाह्यशौच और अन्तःशौच । निष्कपट भाव और समता आदि गुणों से अन्तःकरण पवित्र होता है और जल तथा मृतिका आदि से बाहर के शरीर की शुद्धि होती है । ये चारों गुण, धर्मरूपी वृषभ के मनहरण सुखकरण चारों चरण हैं । जब श्रीजानकी जी की नवीन नखकान्तियों में अनुराग होता है तब सभी गुण अनायास ही और सहज ही रीति में उनमें आ जाते हैं । श्रीकिशोरीजी अपने परात्पर ऐश्वर्य को छिपाये रहती हैं। जिससे लीला रस में अत्यन्त विनोद पाती हैं । प्रकट लीला करने में यही तात्पर्य है कि सभी जीव कृतकृत्य हों और परम माधुर्यजीवीगण अपना अभिलाष पूरा करें ।

श्रीजानकीजी असंख्य कोटि सखियों से परिसेवित रहती हैं । जिनमें तैंतीस मुख्य हैं, उन्हीं के आश्रय से माधुर्य ऐश्वर्यादि सभी रहस्य सिद्ध होते हैं। एक एक सखी की करोड़ों करोड़ सखियाँ किङ्करी हैं। उन तैंतीसों के नाम लिखे जाते हैं जिनके श्रवण करने से सभी वस्तुयें तुच्छ जान पड़ती हैं और श्रीजानकीजी में तथा परिकरों में अखण्ड एकरस स्नेह बढ़ता है। ***श्री, भू, लीला, उत्कृष्टा, क्रिया, योगा, उन्नति, ज्ञाना, पर्वी, सत्या, अनुग्रहा, ईशाना, कीर्ति, विद्या, इला, कांन्ति, लम्बिनी, चन्द्रिका, क्रूरा, कान्ता, वैभीषणी, क्षान्ता, नन्दिनी, शोका, शान्ता, विमला, सुभदा, शोभना, पुण्या, कला, मालिनी, महोदया और आह्लादिनी-*** ये ही तैंतीस सखियाँ शक्ति-शिरोमणि श्रीजानकीजी की प्रधान हैं । ये सब श्रीजानकीजी की भृकुटि देखा करती हैं कि जो आज्ञा हो सो करें। अब इनके स्वरूप गुण संक्षेप से कहे जाते हैं। श्रीदेवी समस्त शोभा श्री और विभूति श्रीजानकीजी के सम्बन्धियों को देती हैं। औरों को केवल सुकृतानुसार चार दिनों के लिये सुख प्रेरणा करती हैं। भू देवी समस्त विश्व का आश्रय हैं । अर्थात् इन्हीं से समस्त विश्व का जन्मादि होता है । लीला देवी से लौकिकी अलौकिकी निखिल लीलायें हुआ करती हैं । ये तीन शक्तियाँ अत्यन्त श्रेष्ठा हैं । उत्कृष्टाजी जीवों को सब प्रकार की उत्कृष्टता प्रदान करती हैं । क्रियादेवी समस्त शुभ क्रियाओं को प्रेरित करती हैं।

योगादेवी अष्टाङ्ग योगादिकों को अधिकारियों के चित्त में प्रेरित करती हैं । उन्नति-देवी सब वस्तुओं की वृद्धि कराती हैं । पर्वीदेवी जय पराजयों की नियन्त्री हैं। सत्याजी अपनी कृपा कोर के कटाक्षों से सत्य की प्रेरणा करती हैं। अनुग्रहाजी स्नेहियों के चित्त में दया अनुकम्पा आदि गुणों की प्रेरणा करतीं हैं । श्रीईशाना-देवी विमुखों के मन में समस्त सुदुस्तर नानात्व भेदों को बसाती है और सज्जनों को ज्ञानादि साधन प्राप्त कराती हैं। श्री कीर्तिदेवी यश देती हैं। श्री विद्यादेवी के प्रसाद से गणेशादि देव, दैत्य, मनुजगण सभी विद्या पाते हैं । इलादेवी के प्रसाद से गद्य पद्यमयी काव्यरूपा मनोहारिणी वाणी निकलती है । कान्तिदेवी कान्ति बढ़ाती हैं। श्रीलम्बिनी देवी की कृपा से श्रीरघुनन्दन-जी के नाम रूप धामादि के चित्र गोचर होते है। श्री चन्द्रिकादेवी सुधामय शीतल प्रकाश देने वाली हैं।

क्रूरादेवी विमुखों के तन, मन,वचन में क्रूरता देती हैं और सज्जनों की क्रूरता हरण करती हैं। कान्ताजी सबों में राग मोह शुभ अशुभ की प्रेरणा करती हैं । श्रीविभीषणाजी असज्जनों को भय शंकादि देती हैं और सज्जनों का भय निवृत्त करती हैं । क्षान्तादेवी क्षमा सहित शान्ति गुण देती हैं । नन्दिनीजी यथाधिकार आनन्द देती हैं। शोकाजी भगवत् विमुखी जीवों को शोक देती हैं और आप शोक रहित रहती हैं | शान्ताजी शान्ति अर्थात् निर्विकल्प समाधिस्थ मति की अवस्था विशेष देती हैं। श्री विमलाजी सज्जनों को बुद्धि की विमलता देती हैं। श्री सुभदाजी जीवों पर अनुग्रह करके हृदय में सद्गुणों को बसाती हैं। शोभनाजी परमा सुषमा देती हैं । श्रीपुण्याजी जिस पर कृपा करती हैं उसे पुण्यमय कर देती हैं । कलादेवी समस्त कलाओं की प्रेरणा करती हैं । श्रीमालिनीजी व्यापकों को व्यापकत्व देती हैं ।

श्री महोदयाजी भक्ति विभव प्रकृति सब वस्तुओं की प्रेरिका हैं । श्रीआह्लादिनी देवीजी श्रीयुगल सरकार के अभिराम नाम और अनूप रूप का आह्लाद स्नेहियों के हृदय में झलका देतीं हैं । यही शक्तियाँ श्रीजानकीजी की सखियाँ हैं इनका परत्व कहने में यद्यपि कोई समर्थ नही है तथापि संक्षेप से कुछ यहाँ कहा गया । इन सखियों के पद कमल और नामों की उपासना से सब मोद विनोद अनायास ही प्राप्त होते हैं । ऐसी श्रीजानकीजी की सखियाँ हैं ।